वार्षिक 150/- रुपये मार्च 2025 वर्ष 27 अंक 05 पृष्ठ - 28 मूल्य 15/-रु.

गोसम्पदा

गोसेवा-पूजा-रक्षा से होगा कुटुम्ब, समाज और राष्ट्र का मंगल

सम्पादकीय

गोसेवा-पूजा-रक्षा से होगा कुटुम्ब, समाज और राष्ट्र का मंगल

पूज्यपाद स्वामी करपात्री जी महाराज ने कहा था – "बूढ़ी, लूली–लंगड़ी, दूध न देने वाली या फिर किसी भी प्रकार की गाय हो उसको बेचना या उसकी हत्या करना अथवा उपेक्षा करना महापाप है। हर तरह से आदरपूर्वक उसकी रक्षा–सेवा–पूजा कुटुंब, समाज और राष्ट्र का मंगल करने वाली होती है।" वास्तव में आज गोरक्षा का प्रश्न नितांत आवश्यक विचारणीय विषय बन गया है। वैसे ऐतिहासिक दृष्टि से आज ही नहीं, यह प्रश्न सनातन है।

यथार्थ में गाय हमारी दृष्टि में पशु नहीं पृथ्वी माता–भूदेवी का प्रतीक है। भूमाता की पूजा हम गाय के ही रूप में करते हैं। भूमि पर जब–जब विपत्ति पड़ी, तब–तब वह गाय का रूप बनाकर भगवान के निकट गई। इस संदर्भ में अनेक पैराणिक कथाएं सुनाई जाती हैं। वस्तुतः गाय हमारे इहलोक और परलोक के आहार की अधिष्ठात्री देवी हैं। हमें इस लोक में भोजन और परलोक में पुण्य गोमाता की कृपा से ही प्राप्त होता है। गाय स्वयं तृण (घास) खाकर हमें दूध देती है, जिससे अनेक स्वादिष्ट, पौष्टिक पदार्थ बनते हैं। गाय के बच्चे (बैल) खेती करके हमें विशुद्ध खाद्यान्न देते हैं। इस प्रकार रोटी, दाल, भात और साग तो हमें गोमाता के पुत्र बछड़ों से ही मिलता है। साथ ही दूध, दही, घी, मक्खन तथा खोया के अनेक पदार्थ प्रत्यक्ष गोमाता से मिलते हैं, यह तो हुई इस लोक की बात।

अब परलोक की बात भी सुन लीजिए। हमारी संस्कृति–परम्परा के अनुसार गर्भाधान–संस्कार से लेकर दाह–संस्कार तक होने वाले सभी सोलह संस्कारों में ऐसा एक भी संस्कार नहीं है जिसमें गोदान और पंचगव्य की आवश्यकता न पड़ती हो। देश के सभी हिन्दुओं का विश्वास है कि मरने के बाद जो वैतरणी नदी पार करनी पड़ती है वह गाय की पूंछ पकड़कर ही पार की जा सकती है। इसीलिए प्रत्येक धर्म प्राण हिन्दू मरते समय अब भी कम–से–कम एक गाय का दान तो करता ही है। इस प्रकार गाय परलोक में भी हमारा उपकार करती है। ऐसी गाय को जो मारता है या उसकी हत्या करता है वह अपने इहलोक और परलोक के समस्त सुकृत्यों व पुण्यकर्मों को नष्ट कर लेता है।

वेदों–पुराणों के अनुसार जिस राज्य में गाय–गोवंश की हत्या होती है, वह राज्य–देश आध्यात्मिकता से दूर हटता जाता है। वहां के निवासियों को सुख–शांति प्राप्त नहीं होती। इस प्रकार जो राष्ट्र गोरक्षा में प्रमाद करता है या गो–हत्या रोकने में असफल रहता है वह इस संसार में 'यश' और 'श्री' से हीन हो जाता है।

स्मरण रहे गोमाता बिना किसी भेदभाव के सभी धर्मों, पंथों, सम्प्रदायों के लोगों को अपने अमृतरूपी दूध (सम्पूर्ण पौष्टिक भोजन) का पान कराकर अपने ही गोबर–गोमूत्र से आरोग्यता–सम्पन्नता भी प्रदान करती है। सच तो यह है कि सम्पूर्ण मानव जाति के भरण–पोषण और मंगलकारी कल्याण में सर्वाधिक उपादेयता है गोमाता–गोवंश की।

दुर्भाग्य से कहें या अज्ञानतावश अभी तक ऐसी गोमाता–गोवंश की हत्या तथा गोमांस–भक्षण को नहीं रोका जा सका है। साथ ही उसकी हर प्रकार से घोर उपेक्षा भी की जा रही है। दुष्परिणामस्वरूप आज सम्पूर्ण मानव समाज विकराल समस्याओं के मकड़जाल में फंसकर और असाध्य रोगों से ग्रसित होकर अतिशय कष्टदायी जीवन जीने को बाध्य है। अतः ऐसी विषम परिस्थिति में भारत को आत्मनिर्भर बनाने और मानव स्वास्थ्य को बचाने के लिये गोवंश–आधारित जीवनशैली अपनाना अपरिहार्य है, अन्य कोई विकल्प है ही नहीं। इसके अलावा सम्पूर्ण देश में गोवंश–हत्या पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना भी अनिवार्य है, क्योंकि जब तक इस पवित्र–पावन भारत भूमि पर गोमाता–गोवंश के रक्त की एक बूंद भी गिरती रहेगी तब तक इस देश में सुख–शांति–समृद्धि कदापि संभव नहीं। हालांकि अब केंद्र सरकार सहित अनेक राज्य सरकारों द्वारा गोवंश पालन–संरक्षण और संवर्धन के लिये अनेक योजनाएं प्रारंभ की गई हैं, जिनके माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था की सुदृढ़ नींव रखी जा सकती है, लेकिन इसके लिए पूरे देश में विराट स्तर पर प्रयास किये जाने चाहिए। ध्यान रहे सुदृढ़ ग्रामीण अर्थव्यवस्था के आधार पर ही प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी का **"आत्मनिर्भर भारत"** का स्वप्न साकार किया जा सकता है। अतः देश के हर नागरिक का परम कर्तव्य है कि वे गोवंश पालन, संवर्द्धन और संरक्षण में तन–मन–धन से एवं समयदान कर अपना अमूल्य योगदान देकर सहभागी बनें।

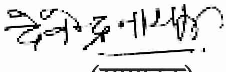

(सम्पादक)

गोसम्पदा

वर्ष – 27 अंक-05 मार्च – 2025 पृष्ठ – 28

संरक्षक :
हुकुमचंद सावला जी

दिनेश उपाध्याय जी
अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–22
मो. : 9644642644
ईमेल : gosampada@gmail.com

सम्पादक : देवेन्द्र नायक
संकट मोचन आश्रम, सै. 6,
रामकृष्णपुरम, नई दिल्ली–22
मो. : 8130049868 कार्या. 011–26174732
ईमेल : gosampada@gmail.com

परामर्शदाता : प्रो. गुरुप्रसाद सिंह जी
मो. : 9838900596

प्रकाशक : राजेन्द्र प्रसाद सिंहल जी
मो. : 9810055638

प्रचार-प्रसार प्रमुख : डॉ. नरेश शर्मा जी
9811111602

व्यवस्थापक : रामानन्द यादव
मो. : 9958710672 कार्या. : 011–26174732

साज-सज्जा : सुमन कुमार

वैधानिक सूचना

‘गोसम्पदा’ से संबन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 माह के अंदर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में मान्य होंगे

सहयोग राशि

एक प्रति : रु. 30/–
वार्षिक : रु. 150/–
आजीवन : रु. 1500/–

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ
दूध की नदियाँ बहेंगीं...	04
गोमय अर्थात गोबर	07
तिरस्कृत-दु:खी गोवंश का परस्पर वार्तालाप	10
गोरक्षा विभाग, विहिप की अखिल भारतीय बैठक एवं अधिवेशन प्रयागराज–महाकुम्भ में सम्पन्न	14
किसानों, वैद्यों और पंचगव्य उत्पादकों का सम्मान	16
गोरक्षा विभाग द्वारा पारित प्रस्ताव	17
मंरूदेश्वर गोशाला में अनुमप गौ भक्ति	18
मौन का माहात्म्य	20
नशा मुक्ति केंद्र में गोमांस नहीं खाने पर हिंदू युवक को पिला दिया तेजाब, मृत्यु	21
The Importance of Cow Dung in Hindu Religion	22
The Holistic Significance of Cow Derivatives in Ayurveda and Sustainable Agriculture	25

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं–

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली
खाता नम्बर – 04072010038910
IFSC CODE : PUNB0040710

नोट : शुल्क **“भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद”** के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011–26174732

पूजा पाराशर (स्वतंत्र लेखिका)

कोई भी देश या राज्य तभी सुखी और सम्पन्न हो सकता है जब उसका राजा अपने कर्तव्यों के प्रति सजग हो और प्रजा के प्रति उदार। प्राचीनकाल में देश अत्यंत समृद्ध था जिसका सबसे बड़ा कारण कर्तव्यनिष्ठ राजा थे, जो न्याय और धर्म की रक्षा हेतु अपने पुत्र को भी मृत्युदंड देते थे।

दूध की नदियाँ बहेंगी...

अघ्न्या, माता, अर्जुनी, सुरभि, माहेयी, अदिति, इज्या, कल्याणी तथा भद्रा आदि शब्द, गोमाता के नाम हैं, जो उसके सम्मान एवं रक्षा हेतु साक्ष्य रूप में मानव को स्मरण करा रहे हैं। देवताओं, ऋषियों, महात्माओं ने ऐसी भूमि जहाँ गोमाता का निवास हो, स्वर्ग, सुंदर, बंदनीय और स्वयं ईश्वर का निवास स्थल बताया है। वेदों में गोमाता की महिमा का बारम्बार वर्णन मिलता है–

ता वां वास्तूत्न्यश्मसि गमध्यै।
यत्र गावो भूरीशृंगा अयासः।।
अत्राह तदुरुगायस्य वृष्णः।
परमं पद्मव भाति भूरी।।

(ऋग्वेद 1/154/6)

गोभक्तगण, अश्विनीकुमार से प्रार्थना करते हैं कि– 'हे अश्विनी कुमार! हम आपके गोलोकरूप निवास स्थान में जाना चाहते हैं, जहाँ बड़ी–बड़ी सींगवाली सर्वत्र जाने वाली गौएँ निवास करती हैं। वहीं पर सर्वव्यापक विष्णु भगवान का परम पद बैकुंठ प्रकाशित हो रहा है।'

आज भी कामधेनु हमारे मध्य वास करती है जिसका अर्थ है, चारों ओर समृद्धि ही समृद्धि। जो गाय प्रत्येक वर्ष बच्चे को जन्म देती है उसे संस्कृत भाषा में **"समांसमीना"** कहते हैं और लोक भाषा में **धेनुपुरही** कहते हैं। पाणिनि ने **"समांसमीना"** पद का विवरण "समांसमां विजायते" (अष्टाध्यायी 5/2/12)सूत्र से किया है। अर्थात *"समायां समायां – वर्षे वर्षे विजायते प्रसूयते"* । प्रतिवर्ष बच्चे को जन्म देने वाली गाय बहुत कम संख्या में हैं। यह गाय बहुत सीधी होती

हैं और किसी भी समय इन्हें दुहा जा सकता है। अतः ऐसी गाय कामधेनु कहलाती हैं। परंतु आज इनकी बहुत कम संख्या होने का कारण, हम स्वयं हैं। जहाँ गोमाता का ख्याल परिवार के सदस्य के समान रखा जाता था, वहीं मात्र लेने की भावना, श्रद्धाहीन भाव और वृद्धावस्था में उसका त्याग, जैसी अवधारणा ने हमें न सिर्फ अपने संस्कारों और संस्कृति से दूर किया है, अपितु अपनी प्रगति और देश की समृद्धि में भी हस्तक्षेप किया है।

एक समय था जब व्यक्ति में दया जैसे सद्‌गुण विद्यमान होते थे। वह अपने सबसे बड़े शत्रु पर भी दया कर, उसकी रक्षा करते थे और बात जब गोमाता या वृष की आती थी तो उनकी रक्षा में कोई भी कदम उठाने के लिए तत्पर रहते थे। अत्रिसंहिता में 'दया' का वास्तविक अर्थ बताया गया है –

परे वा बन्धुवर्गे वा मित्रे द्वेष्टरि वा सदा।
आपत्रे रक्षितव्यं तु दयैषा परिकीर्तिता।।

(अत्रिसंहिता 41)

"अपना, पराया, मित्र, द्वेषी और वैरी कोई भी हो, विपत्ति में पड़े हुए की सदा रक्षा करने को ही दया कहा जाता है।"

राजा परीक्षित ने राज निरीक्षण करते समय एक दिन एक पैर वाला वृष तथा एक अत्यंत दुखी गाय को देखा, जिसकी आँखों से आँसुओं की धार बँधी थी, मानो उसका बच्चा मर गया हो। इससे दुखी हो राजा ने इसका कारण पता किया और उन्हें आश्वासन देते हुए, राजा ने बहुत ही श्रेष्ठ कहा, जो राजा के कर्तव्य परायणता का साक्ष्य हैं –

मा सौरभयानुशुचो व्येतु ते वृषलाद् भयम।
मा रोदीरम्ब भद्रं ते खलानां मयि शास्तरि।।
यस्य राष्ट्रे प्रजाः सर्वास्त्रस्यन्ते साध्व्यसाधुभिः।
तस्य मत्तस्य नश्यन्ति कीर्तिरायुर्भगो गतिः।।

(श्रीमद्‌भागवत 1 /17/ 9 –10)

'हे धेनुपुत्र ! अब आप शोक न करें । इस शूद्र से निर्भय हो जायँ। गोमाता ! मैं दुष्टों को दंड देने वाला हूँ, अब आप रोयें नहीं। आपका कल्याण हो। देवी! जिस राजा के राज्य में दुष्टों के उपद्रव से सारी प्रजा त्रस्त रहती है, उस मतवाले राजा की कीर्ति, आयु, ऐश्वर्य और परलोक आदि सभी नष्ट हो जाते हैं।'

कोई भी देश या राज्य तभी सुखी और सम्पन्न हो सकता है जब उसका राजा अपने कर्तव्यों के प्रति सजग हो और प्रजा के प्रति उदार। प्राचीनकाल में देश अत्यंत समृद्ध था जिसका सबसे बड़ा कारण कर्तव्यनिष्ठ राजा थे, जो न्याय और धर्म की रक्षा हेतु अपने पुत्र को भी मृत्युदंड देते थे।

लगभग 1500 वर्ष पूर्व रचित तमिल महाकाव्य **'शिलप्पदिकारम्'** में चोलवंश के राजा (मनुनीति चोल) का वर्णन आता है, जिसमें दिखाया गया है कि राजा अपने पुत्र को, उसके रथ के नीचे एक बछड़े को कुचल डालने के अपराध में मृत्यु को भेंट चढ़ा देता है। बात यह है कि एक बहुत दुखी गोमाता राजा के द्वार पर आई और वहाँ बाहर लटकती हुई न्याय की घंटी बजाने लगी। घंटी की आवाज सुनकर राजा बाहर आए और गाय द्वारा बंधी हुई रस्सी को खींचते देखकर क्या बात है, यह जानने के लिए अपने सैनिकों को भेजा। जब राजा को पता चला कि राजा के बेटे से

गाय के बछड़े की मृत्यु हो गई है तो राजा ने विचार किया कि गाय के बच्चे का जीवन भी उतना ही महत्व रखता है जितना मनुष्य का, और उसने तुरंत आज्ञा दी कि पुत्र को मृत्युदंड दिया जाय। यह घटना तमिलनाडु राज्य के तंजौर जिले के तिरुवारूर मंदिर में एक पत्थर के बने हुए रथ पर खुदी हुई है। 19वीं शताब्दी के योगी रामलिंग स्वामी (संत वल्ललार) ने इस घटना का उल्लेख किया है तथा राजा को 'मनुस्मृति की शिक्षाओं का मर्मज्ञ' (मनु–नीति–कांड चोलन) कहकर, एक श्रेष्ठ राजा बताया है।

आज वृद्ध गोमाता सेकड़ों की संख्या में भूखी–प्यासी, यहाँ–वहाँ भटकती दिखाई देती हैं। गो संबंधी सरकारी योजनाएँ होते हुए, गोभक्तगणों द्वारा अनेक व्यवस्थाएँ होते हुए भी हमारी गोमाताएँ, हजारों की संख्या में दुर्बल शरीर लिए, दुखी एक छाँव की आस में, भोजन–पानी के बिना चली जा रही हैं....। आज **'दया'** खत्म हो चुकी है सिर्फ **'दाम'** ही रह गया है। गोमाता के इस दयनीय दृश्य को बदलना है तो मात्र सरकार या गोभक्त नहीं, अपितु देश के प्रत्येक व्यक्ति के अंदर वो श्रद्धा, कृतज्ञता और उत्तरदायित्व की भावना उत्पन्न होना आवश्यक है।

महाभारत के विराट पर्व में कौरवों के द्वारा गो अपहरण की घटना बताई गई है, परंतु तमिल प्राचीन काव्य **'तोलकाप्पियम्'** जो लगभग 5000 वर्ष से भी अधिक पूर्व का माना जाता है, इसमें गो अपहरण का स्वरूप बिल्कुल अलग है। 'तोलकाप्पियम्' 'पोरुलअधिकारम्' वेत्वी–तिनाई (गो–हरण) में यह बताया गया है कि किसी शत्रु पर चढ़ाई करने से पूर्व यह आवश्यक है कि उस देश की सभी गायों को गुप्त तरीके से हरण करके अपने अधिकार में कर लिया जाय, परंतु इस प्रकार गायों को हरने का उद्देश्य यह नहीं होना चाहिए कि अपनी प्रजा को या स्वयं को धनी बनाया जाए। इसका उद्देश्य होना चाहिए कि युद्ध से उत्पन्न हिंसा से गायों की रक्षा हो।

गोमाता की रक्षा हेतु जहाँ बड़े–बड़े राजा, वीर अपने प्राण भी त्याग देते थे, वहीं आज का व्यक्ति इसकी महत्ता से अनभिज्ञ है, इसके पीछे छिपे तात्पर्य को समझने में अक्षम है। जिस दिन देश का प्रत्येक व्यक्ति 'गोमाता' से परिचित होगा, उस दिन देश में **'दूध की नदियाँ बहेंगीं',** हर रहस्य खुलेगा। राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त जी द्वारा रचित 'गो–गीत', जिसमें गोमाता की महिमा बताते हुए मानवता को जगाने का प्रयास किया गया है–

गाय कहूँ वा तुझको माय?
अयी आबाल–वृद्ध हम सबकी जीवन भर की धाय!
तेरा मूत्र और गोबर भी पावे, सो तर जाय,
घर ही नहीं, खेत की भी तू सबकी एक सहाय।
न्योछावर है उस पशुतापर यह नरता निरूपाय;
आ, हम दोनों आज पुकारें–कहाँ कन्हैया हाय!

वैद्य नंदिनी भोजराज (एम.डी. आयुर्वेद)

गोमय अर्थात गोबर

गोमय अर्थात गोवंश द्वारा जन्म से मृत्यू तक प्राप्त होने वाला, बिना मांगे सतत रूप से मिलने वाला–गोबर। निसर्ग की रचना विलक्षण है। एक का त्याज्य पदार्थ दूसरे का **'प्राण'** है। उदा. पेड – पौधे प्राणवायु का उत्सर्जन करते हैं–यही प्राणवायु प्राणी सृष्टि को जीवन प्रदान करती है। मनुष्य का मल सूअर खाते हैं इत्यादि... 'गोमय को ही 'गोबर' आम भाषा में कहा जाता है। भारत कृषि प्रधान देश है, जिसके लगभग सभी प्रदेशों में गोबर का उपयोग नित्य जीवन में नियमित रूप से होता है। कृषि से निकलने वाली फसल के बचे हुए अंश ही गोवंश का अन्न है। उसी तरह से गोवंश के गोबर में ही वो जीवाणु है जो पेड–पौधों को उनका अन्न, उन्हें आवश्यक रूप में उपलब्ध करने में विशेष क्षमता रखते हैं। अतः प्रचुर मात्रा में गोबर की भूमि में उपलब्धि होना अच्छी फसल का मूल आधार है।

ताजे पंचगव्य का प्रयोग पूजा–पाठ में नित्य किया जाता है। उसका विधिवत निर्माण कर, मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित कर सेवन करने की विधि वेदों में वर्णित है। यहाँ आभ्यंतर सेवन यानी मनुष्य द्वारा मुखमार्ग से पेट में लेने की विधि का वर्णन आता है। पंचगव्यप्राशन में गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत, गोमूत्र एवम् गोमय का समावेश होता हैं। इनके सेवन से इच्छित फल प्राप्ति के लिए इन सभी का शुध्द होना अनिवार्य है।

ताजे गोबर का उपयोग घरों की लिपाई में, सूखे गोएठे, इंधन रूप में गोबर द्वारा गॅस प्राप्ति, गोबर का उपयोग भूमि का अन्न स्वरूप खाद रूप में हम हमेशा ही करते आ रहे हैं। ऋषि–मुनियों ने गोबर की विशेष क्षमता को जानकर ही सर्वप्रथम उसका उपयोग किया है। ताजे गोबर की विलक्षण कृमि हटाने की क्षमता को आज भी वैज्ञानिकगण प्रत्यक्षप्रमाण में प्रयोगशालाओं में पुनः देख रहे हैं।

ताजे गोमय को ही औषधि के लिए भी लिया जाता है। ताजे पंचगव्य का प्रयोग पूजा–पाठ में नित्य किया जाता है। उसका विधिवत निर्माण कर, मंत्रों द्वारा अभिमंत्रित कर सेवन करने की विधि वेदों में वर्णित है। यहाँ आभ्यंतर सेवन यानी मनुष्य द्वारा मुखमार्ग से पेट में लेने की विधि का वर्णन आता है। पंचगव्यप्राशन में गोदुग्ध, गोदधि, गोघृत, गोमूत्र एवम् गोमय का समावेश होता हैं। इनके सेवन से इच्छित फल प्राप्ति के लिए इन सभी का शुध्द होना अनिवार्य है। अतः जिस गोवंश से यह प्राप्त हो रहा है, उनके स्वास्थ्य का अच्छा होना भी अत्यावश्यक है। मूलतः गोवंश का भारतीय होना भी जरूरी है।

भारत में शोधकार्य करने वाले अनेक संस्थानों द्वारा देशी–विदेशी एवम् नॉनडिस्क्रीप्टीव्ह गोवंश का अभ्यास किया गया है। प्राचीन समय में भारत में लगभग 65 प्रकार की प्रजाति का गोवंश था। भारत के शासन द्वारा यह संख्या इक्तालीस–ब्यालीस बतायी जाती है। उनमें से वर्तमान स्थिति में केवल 37 प्रकार की ही प्रजातियाँ प्राप्त हो रही हैं। उदाहरणार्थ गुजरात की गीर, पंजाब की साहीवाल, महाराष्ट्र की खिल्लार, गवळाऊ इ. भारतीय वंश के एक प्रजाति की गाय को भारतीय वंश का ही दूसरे प्रजाति के सांड़ द्वारा ग्याभिन होने के बाद जो भी बछड़ा या बछिया जन्म लेती है उन्हें नॉनडिस्क्रीप्टीव्ह कहा जाता है। अब इनमें किसी भी प्रजाति का अंश शुध्द/संपूर्ण रूप से नहीं रह पाता। उदाहरण के लिए गवळाऊ गाय को गीर, साहीवाल, खिल्लार या भारत के किसी अन्य प्रजाति के सांड़ द्वारा बच्चे का होना। इस विषय में भी भारत में अनेक स्थानों पर शोधकार्य हो रहे हैं, हुए भी हैं, जिसमें मूल प्रजाति को बचाने के लिए ही वैज्ञानिक बतला रहे हैं। उसमें भी भौगोलिक रचना का परिणाम वहाँ की संपूर्ण जीवसृष्टि पर होने के कारण प्रजाति को शुध्दरूप से ही बचाना एवम् बढ़ाना ही अनिवार्य बताया जा रहा है। अतः गोमय का उपयोग करते समय भी भविष्य में शुध्दता किस तरह से बचाई जा सकती है, इसके लिए ध्यान देना भी अतिआवश्यक है।

भारत के प्राचीन ग्रंथ संपदा में, वेदों में **'गोमय वसते लक्ष्मी'** ऐसा गोमय का वर्णन प्राप्त होता है। अतः उसमें आए हुए बदलाव उसकी शुध्दता को, गुणवत्ता को एवम् परिणामस्वरूप उससे प्राप्त होने वाली लक्ष्मी में भी परिवर्तन लाने की क्षमता को शास्त्रज्ञों ने प्रमाणित किया है। अर्थात विविध प्रकार के गोबर का तुलनात्मक अध्ययन अनेक शास्त्रज्ञों द्वारा अनेक स्थानों पर हुआ है, हो रहा है। लेकिन गुणों में आने वाले परिवर्तन के लिए सभी का एकमत है। शुध्द भारतीय गोवंश जब स्वस्थ रहता है तब उनके द्वारा प्राप्त गोबर में जो जीवाणु हैं, वो ही भूमि के पालन–पोषण का उच्च कोटी का कार्य करते हैं। जो कार्य भारतीयवंश के थोड़े से गोबर से संपन्न हो जाएगा, उतने ही के लिए अन्य गोवंश का लगभग छः गुना से भी अधिक गोबर लगेगा।

वर्तमान स्थिति में मूलतः गोवंश ही खतरे में है। जब हम स्वतंत्र हुए उस समय एक आदमी के पीछे पांच से छः गोवंश भारत में विद्यमान था, जो कि आज एक आदमी के पीछे लगभग दो गोवंश विद्यमान है। अतः गोवंश के घटने वाली इस संख्या पर तुरंत रोक लगने की अनिवार्यता है। सिर्फ इतना ही नहीं बल्कि अत्यधिक प्रमाण में गोवंश संवर्धन बढ़ने की भी अत्यंत आवश्यकता है। गोवंश का पालन दूध के लिए बाद में, लेकिन प्राथमिक रूप से गोबर–गोमूत्र की प्राप्ति के लिए होना अतिआवश्यक है। मनुष्य की औसतन कुल आयु साठ साल बतायी जाती है। लेकिन गोवंश की कुल आयु (भारतीय वंश) लगभग बीस से पच्चीस साल बतायी जाती है। अतः मनुष्य के भरण–पोषण के लिए आवश्यक अन्न प्राप्ति के लिए भूमि का पोषण भी उतना ही आवश्यक है। प्रति वर्ष बढ़ने वाली जनसंख्या की सभी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु थोड़ी जगह में अधिक संख्या में एवम् उच्च गुणवत्ता का पोषण देने वाली अन्न प्रणाली की हमें आवश्यकता है।

अन्न–वस्त्र–निवास, यह हमारी तीन मूल आवश्यकताएँ हैं। अन्न के अंतर्गत शुध्द हवा, शुध्द पेय जल एवम् शुध्द–विषरहित अन्न की उपलब्धता सर्व समाज के लिए पार्याप्त मात्रा में होने की आज

आवश्यकता है। जो भी पदार्थ/ वस्तुएँ हम अपने यहाँ पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं करा सकते उसके लिए हम उन वस्तुओं को पड़ोसी देशों से खरीदते भी हैं, लेकिन उनके द्वारा ली गई वस्तु कौन–सी भूमि की होने, कौन–से बीज द्वारा उत्पादित की हो? क्या हम यह प्रयास कर रहे हैं और वैसे ही गोमूत्र–गोबर का उपयोग करके ही पैदा की गई है? ऐसे पचासों प्रश्न सामने आते हैं। दूसरे देश की भूमि से प्राप्त खाद्य पदार्थ अपनी पध्दति से क्या सही में प्राप्त हो सकता है? इस विषय पर विचार करने की आवश्यकता है।

सर्वप्रथम हम शुध्द हवा की प्राप्ति में गोवंश के संबंध को समझने की आवश्यक्ता है। सुखा गोबर जलाने से वातावरण में जो वायुमंडल तैयार होता है उस स्थिति में मानव स्वास्थ्य के लिए आवश्यक जीव ही रह सकते हैं। जो जीवाणु मनुष्य के लिए हानिकारक हैं, वे जिस जगह में गोबर, गोघृत या दोनों जलने से निकली हुई वायु है वहाँ रह ही नहीं सकते।

प्रत्येक ऋतु बदलाव से वातावरण में भी परिवर्तन आता है। इसका अच्छा–बुरा प्रभाव सभी जीव सृष्टि पर होता है। वातावरण की ठंड लगभग खत्म होकर गर्मी की शुरुवात हो रही है। दिन में गर्म एवम् रात में ठंडक का होना कुछ विशेष विषाणुओं को वातावरण में लाता है। ये हमारे लिए हानिकारक होने से हमें उनसे अपना बचाव करने की आवश्यक्ता होती है।

भारतीय संस्कृति ने इस संपूर्ण रचना का सूक्ष्म अध्ययन कर कुछ विशेष पध्दतियों का समावेश अनेक त्यौहारों में किया है। मनुष्य स्वास्थ्य हेतु सुरक्षा कवच का

विशेषरूप से यहाँ विचार किया गया है। होली इस ऋतु के लिए एक ऐसा ही त्यौहार है जब एक ही दिन विशेष पर सभी मानव बस्तियों में सामूहिक वातावरण की शुध्दि की सोच रखी गई है। यहाँ होली की रचना करते समय गोबर के छोटे गोएठे देवी स्वरूप होली को हार के रूप में पहनाए जाते हैं। फलस्वरूप होली जलाने की शुरुवात में ही गोबर का धुआँ संपूर्ण वातावरण में फैलने से सभी प्रकार के विषाणु भाग जाते हैं। होली सूरज निकलने तक जलती रहे ताकि परिणामस्वरूप भागने वाले विषाणु वापस नहीं लौट सकें। दूसरे दिन का सूर्य निकलते ही वे वातावरण में ही नष्ट हो जाएं। इस विज्ञान को भी आज वैज्ञानिकों द्वारा पुनः स्थापित किया गया है। भारतीय गोवंश के धुएं में एन्टीव्हायरल गुणधर्म प्राप्त हुए हैं। आइए, हम सभी अपने मुहल्ले में होली के दिन गोबर का उपयोग कर वातावरण शुध्दि में अपना योगदान दें। जिज्ञासा हेतु या चिकित्सा परामर्श हेतु गोविज्ञान अनुसंधान केन्द्र द्वारा संचालित महल एवम् गोरक्षण स्थित चिकित्सालयों का लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

हरीशंकर दीक्षित 'पथिक'

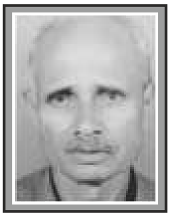

तिरस्कृत-दुःखी गोवंश का परस्पर वार्तालाप

कृषि क्षेत्र में मशीनी हलों के प्रवेश के कारण कुछ ही दशकों में उपेक्षित होकर तिरस्कृत हो चुके गोवंश के कुछ सदस्य जिनमें अधिकांश नर सदस्य थे, जो दिन भर कूड़े–कचरे के ढेर में मुँह मारते हुए अवांछित अखाद्य खाकर, अधभूखे पेट गन्दी नाली–नालों का पानी पीकर, मुहल्ले के खाली प्लाट में रात्रि को बैठे आराम कर रहे थे। उनमें अपनी भाषा में परस्पर वार्तालाप हो रहा था। वार्तालाप का विषय कृषि मंत्रालय की वह घोषणा थी जो पिछले माह कृषि मंत्री ने प्राकृतिक कृषि के सम्बन्ध में की थी।

एक युवा साँड़ कह रहा था कि **'कृषि और कृषक कल्याण मंत्रालय' ने दो हजार चार सौ इक्यासी करोड़ रूपए का बजट प्राकृतिक रूप से कृषि करने के लिए निर्धारित किया है।** इसके अन्तर्गत मशीनी हलों और रासायनिक उर्वरकों तथा कीट–खरपतवार नाशकों के कारण निरन्तर बँजर होती जा रही धरती को फिर से उर्वरा बनाये जाने की योजना है। धरती को उर्वरा बनाने के लिए हमारे गोमय–गोमूत्र की खाद, प्राकृतिक खाद और कीटनाशक बनाये जायेंगे। इस प्रकार रासायनिक खादों और कीट–खरपतवार नाशकों का उपयोग समाप्त कर प्राकृतिक खादों और कीटनाशकों का उपयोग करते हुए एक पन्थ अनेक काज की लोकोक्ति धरती को उर्वरा बनाकर, उत्तम कोटि के पौष्टिक अन्न–फल और शाक– भाजी उपजाकर और साथ ही साथ विलुप्त होते जा रहे कृषिमित्र कीट–पतंगों की वृद्धि करके चरितार्थ होगी। साथ–ही–साथ पर्यावरण की शुद्धि होने से समस्त प्राणियों का स्वास्थ्य भी उत्तम होगा। पक्षियों की वृद्धि होने से हमारे शरीर में पनपने वाले

गोपाल कृष्ण अवश्य ही हमारे देश के बुद्धिजीवियों को प्रेरित कर जनता को अनावश्यक सुख– सुविधाओं के बाजारी जाल से निकलने की प्रेरणा देकर सृष्टि को बचाने का मंगलकारी कार्य सम्पन्न करायेंगे। अनेक संवेदनशील लोग प्रयासरत हैं भी, किन्तु मशीनी बाजार का कुचक्र जटिल होने के कारण उन्हें वांछित सफलता नहीं मिल पा रही है। फिर भी मुझे विश्वास है कि एक–न–एक दिन वे अवश्य सफल होंगे।

परजीवी कीटों की संख्या भी नगण्य हो जायेगी। इससे हमें भी कुछ लाभ ही होगा।

युवा साँड़ की बात सुनकर एक वृद्ध साँड़ ने कहा, बेटा अभी तुम्हें प्राकृतिक खेती का अर्थ ही नहीं ज्ञात है। बिना हमारे प्राकृतिक खेती असम्भव है। ऐसा इसलिये कि ईश्वर ने हमें मनुष्य से पूर्व उसकी आजीविका के प्रमुख आधार रूप में ही रचा है। मनुष्य के आदि पूर्वजों ने इस गूढ़ ईश्वरीय रहस्य को ईश्वर से ही ज्ञान रूप में जाना है। उस ज्ञान के अनुसार आचरण करते हुए मनुष्य की लाखों पीढ़ियाँ बीत चुकी हैं। अब से कुछ दशक पूर्व तक मनुष्य हमारा पालन–पोषण और रक्षा करते हुए, हमारी शक्ति और सम्पदा का समुचित उपयोग कृषि तथा कृषि आधारित उद्योग–धन्धों में करते हुए अपना जीवनयापन करते आये हैं। वस्तुतः यही उनका धर्म है कि वे अपनी आवश्यक आवश्यकताओं की पूर्ति हमारी शक्ति सम्पदा द्वारा करने के लिए हमारा पालन–पाषण और रक्षा अपने माता–पिता के समान आदर–सम्मान करते हुए करें।

अब तक ध्यान से सुन रहे एक किशोर वय के बछड़े ने वृद्ध सांड़ से कहा; यदि ऐसा है तो आज के कृषक हमारी उपेक्षा ही नहीं तिरस्कार तक क्यों करते हैं? हम शीत–ताप में उनके घर से बहिष्कृत होकर अपार कष्ट–दुःख सहन करते हुए भूखे–प्यासे, मारे–मारे फिरने को विवश क्यों हैं? हमारी मातायें जब सद्यः प्रसूता होती हैं तब लोग उन्हें बाँध लेते हैं और जब दुग्ध देने की क्षमता नहीं बचती तब उन्हें खोलकर दुत्कार क्यों दिया जाता है? मुझे याद है इसी मुहल्ले में एक घर में मेरा जन्म हुआ था।

मुझे जीने भर का दुग्ध भी नहीं मिलता था। घर मालिक मेरी माता को प्रातः दुहने के बाद खोलकर हांक देता था। मैं दालान के कोने में संध्या तक बँधा रहता था। संध्या होने पर माँ आती थी तब नाम मात्र भर सूखा भूसा उसे मिलता था। जन्म से दस पन्द्रह दिन बाद माँ के पेन्हाते ही मुझे भी सूखे भूसे के पास ही बाँध दिया जाता था। छः–सात माह बाद जब माँ ने दूध देना बन्द कर दिया तब हम दोनों को भगा दिया गया। इस समय माँ एक अन्य मुहल्ले में मेरी बहन के साथ रहती है। कुछ ही दिनों में जब दूध देने में असमर्थ हो जायेगी तो फिर दुत्कार कर भगा दी जायेगी। क्या अब हमारी यही दशा सदैव रहेगी?

किशोर वय के बछड़े की बात सुनकर वृद्ध सांड़ ने कहा, बेटा! अब तो लगता है जब तक प्रलय होकर सृष्टि का विनाश नहीं हो जाता तब तक हमारी यही दशा रहेगी अथवा खण्ड प्रलय होने पर जब कलियुग में कलयुग का प्रभाव समाप्त हो जायेगा तब फिर मनुष्यों को हमारा महत्व समझ में आयेगा। तब पेट भरने के लिये वे फिर से हमारा आदर–सम्मान करने लगेंगे। फिर से कृषि में हमारा उपयोग करने के लिये वे हमारा पालन–पोषण करेंगे। प्रलय या खण्ड प्रलय से धरती पर मनुष्यों की ही नहीं लगभग समस्त प्राणियों की दुःखद मृत्यु होगी, जिसका एकमात्र कारण होगा मनुष्य। आज का नितान्त स्वार्थी–विलासी मनुष्य।

अब युवा साँड़ ने कहा, हे तात! क्या इस भीषण प्रलय की त्रासदी से बचने का कोई उपाय नहीं है? उत्तर में वृद्ध साँड़ ने कहा, वत्स! उपाय तो है किन्तु लगता नहीं कि आज के अति सुविधा भोगी–विलासी मनुष्य जो निरन्तर अधिकाधिक मशीनाश्रित होते जा रहे हैं इसे अपनायेंगे। कारण यह है कि विलासमद समस्त मदों से घातक है। यह मनुष्य की बुद्धि को भ्रमित कर उसे विवेकहीन बना देता

है। विवेकहीन मनुष्य अपनी ही सन्तानों के भाग को प्रकृति माता को पीड़ित–प्रताड़ित कर अर्थात् नोच–खसोटकर छीन लेता है। उन्हीं संतानों का भाग जिनके लिए धन सम्पत्ति संग्रह करने के लिये दूसरों की सन्तानों का भाग अपहृत करने में संकोच तक नहीं करता।

अब किशोर बछड़े ने कहा, हे तात हमारे देश में जो लोकतान्त्रिक सरकार है वह ऐसे लोगों पर अंकुश क्यों नहीं लगाती जो दूसरों का भाग अपहृत करते हैं? वृद्ध सांड़ ने उसे समझाते हुए कहा, वत्स! **''यथा राजा तथा प्रजा'' राजतन्त्र का मूलाधर है और लोकतन्त्र का आधार है ''यथा प्रजा तथा राजा''**। अभी देश की राजधानी दिल्ली में प्रजा ने शासन के लिये प्रतिनिधि चुने हैं। जिस दल ने जनता को सर्वाधिक सुविधा भोग की गारन्टी दी है जनता ने उसे ही सत्ता सौंपी है। मुझे तो यह भय है कि जनता का यह बढ़ता जाता सुविधाभोग बढ़ते–बढ़ते देश की आर्थिक स्थिति को रसातल में न पहुँचा दे।

अब युवा सांड़ ने मूल विषय पर आते हुए वृद्ध सांड़ से कहा, तात! हमारे देश के कृषिमंत्री ने जो प्राकृतिक कृषि के लिये लगभग ढाई हजार करोड़ का बजट घोषित किया है, क्या उससे हमारी दशा में सुधार नहीं होगा? इसका उत्तर देते हुए वृद्ध सांड़ ने कहा, वत्स! कृषि मंत्री ने प्राकृतिक कृषि में हमारी उपयोगिता के सम्बन्ध में स्पष्ट रूप से कुछ नहीं कहा है। वे जानते हैं कि आज का किसान मशीनी हल द्वारा घण्टों की जुताई मिनटों में कर लेता है। यदि उसे बैल से जुताई करने को कहा जायेगा तो वह भावी चुनावों में सत्तारूढ़ दल को सत्ताच्युत कर देगा। वर्तमान सरकार ने किसानों को सम्मान निधि इसलिये दी है कि उनको इससे कुछ राहत मिल सके। यहाँ सरकार से भूल यह हुई है कि यह सम्मान निधि केवल बैलों से खेती करने वाले किसानों को ही दी जाती। साथ–ही–साथ परम्परागत कृषि यन्त्रों में आवश्यक सुधार कर किसानों को रियायती मूल्य पर दिये जाने वाले कार्य भी करती। बैल चालित ट्रैक्टरों और मड़ायी के उन्नत यन्त्रों का निर्माण कर इनका उपयोग करने वाले बैल पालक किसानों को वर्तमान से दो गुनी अधिक सम्मान निधि देने से भी देश को बहुत लाभ होता।

यह वार्तालाप सुनकर एक छोटा बछड़ा जो अपनी माता के रीते थनों से दुग्धपान का प्रयास कर रहा था, वृद्ध सांड़ के पास आकर बोला, हे तात! क्या हमारे दुखों का अन्त नहीं होगा? उस छोटे बछड़े को दुलार से चाटते हुए वृद्ध सांड़ ने कहा, वत्स! मैं तो नित्य ही गोपाल कृष्ण से प्रार्थना करता हूँ कि हे केशव! मनुष्य को सद्‌बुद्धि देकर धरती की शिव–सुन्दर सृष्टि के प्रति उसके कर्तव्यों का भान कराकर उसे अपने धर्म का पालन करने हेतु प्रेरित करो। मैं निराशावादी नहीं हूँ, अतः आशा करता हूँ कि गोपाल कृष्ण अवश्य ही हमारे देश के बुद्धिजीवियों को प्रेरित कर जनता को अनावश्यक सुख– सुविधाओं के बाजारी जाल से निकलने की प्रेरणा देकर सृष्टि को बचाने का मंगलकारी कार्य सम्पन्न करायेंगे। अनेक संवेदनशील लोग प्रयासरत हैं भी, किन्तु मशीनी बाजार का कुचक्र जटिल होने के कारण उन्हें वांछित सफलता नहीं मिल पा रही है। फिर भी मुझे विश्वास है कि एक–न–एक दिन वे अवश्य सफल होंगे। वर्तमान सरकार का प्राकृतिक कृषि हेतु लगभग ढाई हजार करोड़ रुपये का बजट इस बात का संकेत है कि निकट भविष्य में इस योजना का प्रमुख अंग हमें अवश्य बनाया जायेगा, क्योंकि बिना हमारे यह योजना फलीभूत हो ही नहीं सकती है।

वत्स, मुझे आभास हो रहा है

कि कृषि और कृषक कल्याण मंत्रालय की प्राकृतिक कृषि की योजना हमारे हित में सरकार का प्रथम चरण है। इसके दूसरे चरण में कृषि क्षेत्र में बैल चालित ट्रैक्टरों का चलन प्रारम्भ हो सकता है। तीसरे चरण में उन्नत तेल और गुड़ के कोल्हुओं का प्रवेश लघु उद्योग के रूप में होने तक हमारा वंश अपनी खोयी हुई प्रतिष्ठा आदर–सम्मान सहित प्राप्त कर लेगा। तब गोपालकों के घरों में गोवत्स के जन्मते ही घण्टे–घड़ियाल फिर से बजने लगेंगे। हम सब ईश्वर से प्रार्थना करें कि ऐसा यथाशीघ्र हो, क्योंकि ऐसा न होने पर हमारी हितैषी प्रकृति जो हमारे दुख को देखकर कुपित होती जा रही है, की सहनशक्ति समाप्त होने से खण्ड प्रलय होना अनिवार्य है। महान विचारक और राजनीतिक आचार्य चाणक्य ने कहा भी है– **''प्रकृति कोपः सर्व कोपोभ्याम् गरीयान''।**

वृद्ध सांड़ की बात सुनकर एक प्रौढ़ सांड़ कुछ रुष्ट होते हुए बोला। हे अग्रज! वर्तमान सरकार ऐसे लोगों की है जो हमारे हितैशी ही नहीं हमारा आदर–सम्मान करने वाले भी हैं। फिर भी न जाने क्यों वे किंकर्तव्यमूढ़ से हमारे दुख को देखते हुए भी हमारे अस्तित्व की रक्षा का समुचित प्रयास नहीं कर रहे हैं। यदि वे चाहें तो बाजार पर अंकुश लगाकर कृषि क्षेत्र में मशीनी हलों का उपयोग बड़ी जोत वाले किसानों तक सीमित करके लघु और सीमान्त किसानों को हमारे द्वारा कृषि करने हेतु प्रेरित कर सकते हैं। पहले हम तीन फाल वाले हल तो खींच ही चुके हैं। मंड़ायी के उन्नत यन्त्र भी हम खींचते रहे हैं। सुना है **भौती गोशाला के अनुरोध पर कानपुर के दुर्गा अभियन्त्रण (इंजीनियरिंग) कालेज ने ट्रैक्टर जैसा बैल चालित हल बनाया है,** किन्तु किसानों की उदासीनता और सरकार की उपेक्षा के कारण उसका प्रसार नहीं हो सका। यदि सरकार चाहती तो उसमें वांछित सुधार कराकर किसानों को प्रोत्साहित कर सकती थी। यदि कृषि सम्माननिधि उन किसानों को दी जाती जो हमारी शक्ति–सम्पदा के आधार पर ही खेती करते तब हमारा दुख दूर हो जाता।

अब वृद्ध किसान ने उसे समझाते हुए कहा, सरकार चाहती तो है किन्तु वह कुछ राजनीतिक कारणों से अभी ऐसा नहीं कर पा रही है। हमारे देश के किसान और श्रमिक आज पूर्व की अपेक्षा अति न्यून परिश्रम कर खेती करते हैं। उनका पर्याप्त समय भी बचता है। इस समय का उपयोग वे अन्य प्रकार से धर्नाजन के लिये करके बाजार जनित अनावश्यक आवश्यकताओं जैसे पान मसाला आदि व्यसनों और मोटर सायकिलों के लिये पेट्रोल आदि में करते हैं। अनेक तो ऐसे भी हैं जो दारू जैसे दुर्व्यसनों के आदी तक हो चुके हैं। सरकार अभी देश हितैषी अन्य अति आवश्यक राजनीतिक कार्य करना चाहती है जिससे देश की अखण्डता सुरक्षित रहे। अर्थात् देश का एक और विभाजन कराने की पड़ोसी शत्रु देशों की योजना धराशायी हो जाये। इसलिये वर्तमान सरकार ऐसा कोई भी काम नहीं करना चाहती जिससे वह सत्ता से बाहर हो जाये, क्योंकि देश की दीर्घकालिक सुरक्षा का प्रबन्धन सत्ता में रहकर ही किया जा सकता है।

वृद्ध सांड़ की बातें सुनकर वहाँ उपस्थित समस्त गोवंश ने संतोष व्यक्त करते हुए ईश्वर से प्रार्थना की कि सरकार शीघ्र ही समस्याओं का समाधान करने में समर्थ हो।

चलभाष – 8765805322

गोरक्षा विभाग, विहिप की अखिल भारतीय बैठक एवं अधिवेशन प्रयागराज-महाकुम्भ में सम्पन्न

19 फरवरी, 2025 को प्रयागराज कुम्भ के विहिप शिविर, सेक्टर–18, में गोरक्षा की अखिल भारतीय बैठक सम्पन्न हुई। दोपहर 1 से 2 बजे तक संच की बैठक माननीय दिनेश उपाध्याय द्वारा एवं 2.30 बजे गोपूजन, स्त्वन, आरती श्री त्रिलोकी नाथ बागी एवं श्री अवधेश गुप्ता द्वारा संपन्न कराई गई। माननीय दिनेश चन्द्र जी (केन्द्रीय संरक्षक) मा. हुकुमचन्द सावला (संरक्षक–गोरक्षा), डॉ. गुरु प्रसाद सिंह जी द्वारा गोपूजन कर गोमाता के आशीर्वाद से बैठक प्रारम्भ हुई। प्रथम सत्र में सामूहिक राम–दरबार, गोमाता के समक्ष दीप प्रज्वलन, दीपमंत्र व आचार पद्धति से बैठक का शुभारम्भ किया गया। श्री गंगा प्रसाद पाठक जी – ब्रज प्रान्त गोरक्षा प्रमुख ने आचार पद्धति से सभी कार्य संपन्न कराये।

उद्घाटन सत्र में मा. दिनेश चन्द्र जी ने गोपालन एवं गोसंरक्षण पर प्रकाश डाला एवं दिनेश उपाध्याय जी (अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख) ने संगठनात्मक, आर्थिक, प्रशिक्षणात्मक बातों के बारे में संवाद करते हुए आगे की योजना पर क्रियान्वयन हेतु आग्रह किया। दूसरे सत्र में दो भागों में बैठक हुई। सभी ट्रस्टियों के साथ मा. हुकुमचन्द सावला जी एवं श्री गुरु प्रसाद सिंह जी तथा शेष टोली के साथ कार्यकर्त्ताओं के मध्य मा. स्थानुमलयन व मा. दिनेश उपाध्याय द्वारा दायित्वबोध पर चर्चा की गई। तीसरे सत्र में मा. कोटेश्वर राव शर्मा जी (संयुक्त महामंत्री विहिप) द्वारा मार्गदर्शन प्राप्त हुआ।

20 फरवरी, को प्रातः 11 बजे से अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। तमिलनाडू के पूज्य संत तिरुप्पदा स्वामीकल तिरुवन्नमलै की अध्यक्षता में मंचासीन अधिकारियों द्वारा रामदरबार, गोमाता के समक्ष दीप–प्रज्वलन कर एवं गंगाप्रसाद पाठक द्वारा आचार पद्धति से अधिवेशन का श्रीगणेश किया गया। श्री हरेन्द्र अग्रवाल जी (केन्द्रीय मंत्री) द्वारा मंच का संचालन किया गया। उन्होंने पूज्य संतों का परिचय कराया। अवध प्रान्त के अध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष एवं प्रान्त गोरक्षा प्रमुख द्वारा सभी संतों का स्वागत किया गया। मुख्य मंच के अधिकारियों का परिचय मा. दिनेश उपाध्याय द्वारा कराया गया एवं स्वागत काशी प्रान्त अध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष एवं प्रान्त गोरक्षा प्रमुख द्वारा स्वागत किया गया। साथ ही गोरक्षा के क्षेत्र प्रमुख एवं केन्द्रीय अधिकारियों का कानपुर प्रान्त के अध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष एवं प्रान्त गोरक्षा प्रमुख द्वारा स्वागत किया

गया। विशेष सम्मान हेतु देश से आये हुए बंधु–भगिनी जो कृषि, पंचगव्य, घरेलु उत्पाद में विशेष भूमिका निभा रहे हैं उनका सम्मान मुख्य मंच के अधिकारियों द्वारा किया गया। गोरक्ष प्रान्त के अध्यक्ष, मंत्री, कोषाध्यक्ष एवं प्रान्त गोरक्षा प्रमुख ने सहयोग किया। प्रस्तावना मा. दिनेश उपाध्याय (अखिल भारतीय गोरक्षा प्रमुख) ने रखी। गाय का महत्व, गोपालन, गोसंवर्द्धन, गोसंरक्षण, गो–अनुसंधान तथा जन–जागरण व संगठनात्मक स्थिति मजबूत हो, इसका विशेष आग्रह किया। गाय को विश्व माता घोषित करने का भी आग्रह किया।

गाय और कृषि विषय पर श्री भगत सिंह पुरोहित, गाय और पंचगव्य पर डॉ. प्रज्ञान त्रिपाठी, गाय और गोभक्ति पर महिला डॉ. माधवी गोस्वामी, गाय और विज्ञान पर डॉ. नरेश शर्मा ने प्रकाश डाला। मुख्य वक्ता मा. हुकुमचन्द सावला जी ने ओजस्वी वाणी से जनता को आनंदित कर दिया। बीच–बीच में तालियों की गड़गड़ाहट एवं जयघोष से भावनाओं का प्रकटीकरण किया गया।

श्री शशांक शेखर जी द्वारा **गोरक्षा प्रस्ताव** का वाचन किया गया। श्री लाल बहादुर सिंह जी एवं श्रीमती नन्दिनी भोजराज ने प्रस्ताव का अनुमोदन किया। अधिवेशन में श्री शेखर मूदड़ा जी (अध्यक्ष–गोसेवा आयोग महाराष्ट्र), श्री स्वर्ण कुमार गर्ग जी (अध्यक्ष–गोसेवा आयोग हरियाणा), श्री पूरन यादव जी (उपाध्यक्ष गोसेवा आयोग हरियाणा), श्री विश्वेश्वर जी पटेल (अध्यक्ष–गोसेवा आयोग छत्तीसगढ़), सम्माननीय श्री श्याम बिहारी जी (अध्यक्ष–गोसेवा आयोग उत्तर प्रदेश), श्री रमाकान्त उपाध्याय जी (सदस्य, गोसेवा आयोग उत्तर प्रदेश), श्री बल्लभ भाई कथूरिया जी (राष्ट्रीय कामधेनू आयोग–गुजरात) विशेष रूप से मंच पर उपस्थित रहे। मा. दिनेश उपाध्याय जी द्वारा इन विशिष्ठ अतिथियों का परिचय एवं मंचासीन अधिकारियों द्वारा सम्मान किया गया। श्री श्याम बिहारी गुप्ता जी ने सभी का आभार एवं प्रस्ताव की बातों को अपने–अपने राज्यों में क्रियान्वयन हेतु आश्वासन दिया। पूज्य स्वामी जी द्वारा आशीर्वचन एवं मा. गुरू प्रसाद सिंह (अध्यक्ष) जी द्वारा गाय के वैज्ञानिक पक्ष पर प्रकाश डालते हुए सभी का आभार व धन्यवाद व्यक्त किया गया। अन्त में पूर्णतः मंत्र व जयघोष के साथ अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

किसानों, वैद्यों और पंचगव्य उत्पादकों का सम्मान

क्र.	नाम	क्षेत्र
	जयपुर प्रान्त	
1.	श्री मधुसूदन मंगल जी	(पंचगव्य)
	उत्तराखंड	
1.	डॉ. संजय गोस्वामी जी	(पंचगव्य)
	कोकण प्रान्त	
1.	श्री अनिकेत वापट जी	(गोउत्पाद)
	पश्चिम महाराष्ट्र	
1.	श्री नितेश ओझा जी	(कृषि)
	देवगिरी प्रान्त	
1.	श्री परमेश्वर नलवडे जी	(कृषि)
	विदर्भ प्रान्त	
1.	श्री अंशु दर्शन भगत जी	(गोउत्पाद)
2.	श्री कांचन कुदवले	(कृषि)
3.	श्रीमती दीपाताई कराणे जी	(कृषि)
	हरियाणा प्रान्त	
1.	पूज्य शोभादास जी महाराज	(कृषि)
	उत्तर पूर्व प्रान्त (आसाम)	
1.	श्री हनुमान बहेती जी	(पंचगव्य)
2.	श्री अंकुर जी	(घरेलू उत्पाद)
	कानपुर प्रान्त	
1.	श्री हरिओम जी अतर्रा (बाँदा)	(घरेलू उत्पाद)
2.	श्री महेश मिश्रा जी	(कृषि)
3.	श्री विमलकुमार डूबे	(कृषि)
4.	श्री अरविन्द द्विवेदी	(कृषि)
	काशी प्रान्त	
1.	श्री दिनेश मिश्रा जी	(पंचगव्य)
2.	श्री त्रिभुवन नाथ पटेल जी	(कृषि)
3.	श्री धनंजय सिंह धवल जी	(पंचगव्य)

क्र.	नाम	क्षेत्र
4.	श्रीमती आभा सिंह जी	(गोउत्पाद)
5.	श्री कृष्ण कुमार खेमका जी	(कृषि)
	Karnataka	
1.	Dr. D.P.Ramesh	(पंचगव्य)
	Telangana	
1.	Dr. Prashant Neemkar	(पंचगव्य)
	Kerala	
1.	Dr. Srimati Sheeja	(पंचगव्य)
	दक्षिण बिहार	
1.	श्री अशोक कुमार सिंह जी	(पंचगव्य)
	अवध प्रांत	
1.	श्रीमती पूजा चौहान जी	(गोउत्पाद)
2.	श्री किस्मत राय जी	(गोउत्पाद)
3.	श्री भगवती प्रसाद जी	(कृषि)
4.	श्री राम प्रसाद जी	(कृषि)
	मालवा प्रांत	
1.	श्री गजानन्द जी कुश्वाहा	(कृषि)
2.	सुश्री प्रिया सोनी जी	(कृषि)
3.	श्रीमती दिपीका मण्डला	(कृषि)
4.	सुश्री विजया शर्मा जी	(घरेलू उत्पाद)
5.	श्री किशोर सिंह जी	(घरेलू उत्पाद)
6.	श्री मनीष नामदेव जी	(गोचिकित्सा)
7.	श्री बन्टी पटेल जी	(गोचिकित्सा)
8.	श्रीमती गीता जी पवार	(गोचिकित्सा)
	छत्तीसगढ़	
1.	श्री तिलक साहू जी	(कृषि)
2.	श्री शेर सिंह जी	(कृषि)
3.	श्रीमती वन्देश्वरी शर्मा जी	(घरेलू उत्पाद)
4.	श्री नित्यानन्द जी	(घरेलू उत्पाद)
5.	श्री योगेश साहू जी	(घरेलू उत्पाद)

गोरक्षा विभाग द्वारा पारित प्रस्ताव

भारत कृषि प्रधान देश है और गोधन इसकी आत्मा है। गोसंरक्षण एवं संवर्द्धन केवल धार्मिक आस्था का विषय नहीं है, बल्कि यह देश की अर्थव्यवस्था, पर्यावरण संतुलन, जैव विविधता, जैविक कृषि और सांस्कृतिक विरासत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। भारत की सनातन संस्कृति में गोमाता को माता का स्थान प्राप्त है और उसके संरक्षण से ही देश की सामाजिक, आर्थिक और आध्यात्मिक उन्नति संभव है। गोचर भूमि का अतिक्रमण, गोवंश हत्या, गोवंश तस्करी एवं दुग्ध उत्पादन के चक्कर में भारतीय नस्लों के गोवंशों का विदेशी नस्लों के संयोग से नस्ल संहार कर हमारी परंपरागत गो–आधारित कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को गंभीर क्षति पहुंचाई गई। ऐसे में गोसंरक्षण केवल धार्मिक विषय न होकर, संपूर्ण राष्ट्र की समृद्धि एवं अस्तित्व का अनिवार्य अंग बन चुका है। महाकुंभ केवल एक पर्व नहीं, बल्कि यह भारत की सनातन संस्कृति, आध्यात्मिक परंपरा और राष्ट्रधर्म का महानतम संगम है। 2025 के इस महाकुंभ का शुभ अवसर, जब भारत अमृतकाल में प्रवेश कर चुका है, हमारी सांस्कृतिक चेतना को जागृत करने और राष्ट्र की गौरवशाली विरासत को पुनर्स्थापित करने का पावन क्षण है। यह पुण्यकाल, जिसमें लिए गए संकल्प निश्चित रूप से सिद्ध होते हैं, हमें गोसंरक्षण एवं राष्ट्र रक्षा के लिए ठोस कदम उठाने की प्रेरणा देता है। प्रयागराज के पावन संगम तट पर विश्व हिंदू परिषद–गोरक्षा विभाग (भारतीय गोवंश रक्षण एवं संवर्द्धन परिषद) के तत्वावधान में आयोजित अखिल भारतीय गोभक्त अधिवेशन में हम सभी गोभक्त, संत समाज, महापुरुष, कृषक वर्ग, गोरक्षक एवं गोपालक एकजुट होकर गोसंरक्षण, गोवंश संवर्द्धन और गोचर भूमि की रक्षा हेतु संकल्पित हैं। इस ऐतिहासिक अवसर पर, हम केंद्र एवं राज्य सरकारों से आग्रह करते हैं कि गोसंरक्षण एवं संवर्द्धन को प्राथमिकता दी जाए और निम्नलिखित महत्वपूर्ण बिंदुओं को तत्काल प्रभाव से लागू किया जाए।

1. गाय को राष्ट्रीय–सांस्कृतिक धरोहर घोषित करते हुए गोपाष्टमी को राष्ट्रीय पर्व घोषित किया जाए।
2. भारतीय नस्ल की गायों के संरक्षण–संवर्द्धन हेतु गो–संवर्द्धन मंत्रालय की स्थापना की जाए।
3. गोहत्या रोकने के लिए केन्द्रीय स्तर पर कठोर कानून बनाया जाए और इसका सख्ती से पालन कराया जाए।
4. गोचर भूमि को अतिक्रमण मुक्त कर गोचर प्राधिकरण का गठन किया जाए तथा गौशालाओं एवं गोचर भूमि के विकास के लिए सरकारी योजनाओं के अन्तर्गत आर्थिक सहायता उपलब्ध कराई जाए।
5. देश भर में हो रही अवैध गोवंश की तस्करी को रोकने के लिए इसे गैर जमानतीय अपराध घोषित करते हुए कठोर दंड का प्रावधान किया जाये तथा गोवंशों की तस्करी एवं हत्या से सम्बंधित अपराधों के निवारण के लिए प्रत्येक थाने में विशेष पुलिस पदाधिकारी की प्रतिनियुक्ति की जाए।
6. कत्लखानों के स्थान पर गौ–अभयारण्य स्थापित किए जाएँ।
7. मांस निर्यात नीति में संशोधन करते हुए भारत से मांस निर्यात पूर्ण रूप से प्रतिबंधित किया जाए।
8. जेलों में गौशालाएँ खोलकर सकारात्मक क्रांति को सफल बनाया जाए, जिससे कैदियों का श्रम गोसेवा में लगे और उन्हें सुधार का अवसर मिले।
9. गोवंश आधारित अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित किया जाए और गो–ग्राम आधारित कृषि, स्वास्थ्य एवं उद्योग नीति को अपनाया जाए एवं गो–उत्पादों (गोबर, गोमूत्र, जैविक खाद, पंचगव्य आदि) के उपयोग को बढ़ावा देकर आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहित किया जाए।
10. गोवंश संरक्षण एवं संवर्द्धन के विषय को विद्यालय एवं महाविद्यालयों के पाठ्यक्रमों में शामिल किया जाए और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से इसका महत्व पढ़ाया जाए तथा गोवंश से संबंधित वैज्ञानिक अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाए, जिससे जैविक कृषि, औषधि निर्माण और पर्यावरण संतुलन में गोवंश का योगदान सुनिश्चित किया जा सके।
11. गोवंश संरक्षण के मामलों के शीघ्र निपटारे के लिए विशेष न्यायालय (फास्ट–ट्रैक कोर्ट) की स्थापना की जाए तथा इसके लिए विशेष अभियोजन पदाधिकारियों की नियुक्ति भी की जाए।

यह प्रस्ताव भारतीय संस्कृति, पर्यावरण और आर्थिक संरचना में गोवंश की महत्ता को पुनः स्थापित करने के लिए एक ठोस कदम है। हम केंद्र और राज्य सरकारों से पुनः आग्रह करते हैं कि उपरोक्त बिंदुओं को प्राथमिकता के आधार पर लागू किया जाए, जिससे गोवंश की रक्षा और संवर्द्धन सुनिश्चित हो सके।

प्रस्तुतकर्ता *: शशांक शेखर (अखिल भा. विधि प्रमुख)*
अनुमोदनकर्ता *– 1. लालबहादुर सिंह,*
2. डॉ. नन्दिनी भोजराज

के. प्रिया (स्वतंत्र लेखिका)

मरुंदीश्वर गोशाला में अनुपम गौ भक्ति

आज की दुनिया में जहाँ करुणा और निःस्वार्थता बहुत कम होती जा रही है, एक छोटी–सी मरुंदीश्वर गौशाला गौ–सेवा जैसे महान उद्देश्य के प्रति पूर्ण समर्पण का एक शानदार उदाहरण है। पिछले एक दशक से यह साधारण दिखने वाली गौशाला देशी गोवंश की न केवल अथक देखभाल कर रही है, बल्कि दक्षिणी चेन्नई के तिरुवानमियुर क्षेत्र में स्थित बहुत प्राचीन शिवालय **मरुंदीश्वर मंदिर** में पवित्र अनुष्ठानों के लिए अपनी देसी गायों का शुद्ध दूध भी उपलब्ध करा रही है और पूरे समुदाय में गाय–गोवंश की रक्षा और संवर्द्धन को बढ़ावा दे रही है।

गोसेवक व संस्थापक ई. मोहन और मणिमेघलई की सेवाओं द्वारा पूर्ण नियोजित रूप से संचालित यह मरुंदीश्वर गौशाला उन लोगों के लिए आशा की किरण है, जो हमारी प्राकृतिक विरासत को संरक्षित करने के महत्व में विश्वास करते हैं। हमारी भारतीय संस्कृति में गायों के महत्व और पारिस्थितिक संतुलन बनाए रखने में उनकी भूमिका की गहरी समझ के साथ, गौशाला के संस्थापकों ने इन सात्विक प्राणियों के लिए एक सुरक्षित आश्रय प्रदान करने के लिए खुद को पूरी तरह से समर्पित कर दिया है।

इस गोशाला की दिनचर्या

उनकी प्रतिबद्धता का प्रमाण है। हर दिन वे 15–20 गोवंशों की देखभाल करते हैं, जो सभी देशी नस्ल के हैं। इनमें 5 बछड़े भी शामिल हैं। सुबह–सुबह गायों का दूध निकाला जाता है और 2 लीटर दूध भगवान शिव के पवित्र अभिषेक अनुष्ठान के लिए मरुंदीश्वर मंदिर में बिना नागा किये पहुँचा दिया जाता है। शेष दूध व्यावसायिक रूप से बाहरी लोगों को बेचा जाता है, जो गौशाला के लिए आय का एक स्थायी स्रोत है।

लेकिन इस मरुंदीश्वर गोशाला का योगदान दूध उत्पादन से कहीं आगे तक फैला हुआ है। वे मंदिर और बाहरी लोगों को गोमूत्र और गोबर भी मुहैया कराते हैं, जिसका उपयोग औषधीय और कृषि उद्देश्यों के लिए किया जाता है। मंदिर के प्रवेश द्वार पर गोबर व गोमूत्र की व्यवस्था करना भी इनकी सेवा कार्य में शामिल है। इससे न केवल प्राकृतिक और जैविक उत्पादों के उपयोग को बढ़ावा मिलता है, बल्कि रासायनिक–आधारित उर्वरकों और कीटनाशकों पर निर्भरता को कम करने में भी मदद मिलती है।

इसके अलावा, मरुंदीश्वर गौशाला स्थानीय समुदाय के लिए रोज़गार और आर्थिक व्यवहार्यता के स्रोत के रूप में भी उभरी है। गायों की देखभाल करने वालों, दूध बेचने वालों और अन्य सहायक कर्मचारियों को रोज़गार प्रदान करके, गौशाला ने स्थानीय समुदाय के आर्थिक सशक्तिकरण में भी अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। गोवंश संरक्षण–संवर्द्धन और रोजगार उपलब्ध कराने की दृष्टि से समाज के लिए एक आदर्श है।

मरुंदीश्वर गोशाला के सबसे उल्लेखनीय पहलुओं में से एक केवल गायों की देखभाल करने की उनकी प्रतिबद्धता है। यह निर्णय गायों में निहित दैवीय शक्ति के प्रति उनके गहरे सम्मान और गोवंश के स्वास्थ्य और उनकी विविधता को बनाए रखने में गायों की महत्वपूर्ण भूमिका को प्रदर्शित करता है।

जब दुनिया जलवायु परिवर्तन, पर्यावरणीय संकट और खाद्य सुरक्षा की चुनौतियों से जूझ रही है तब मरुंदीश्वर गोशाला का काम हमारी प्राकृतिक विरासत को संरक्षित करने के महत्व को रेखांकित करता है।

जब हम मरुंदीश्वर गोशाला की निःस्वार्थ गोसेवा पर विचार करते हैं, तो यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत प्रयासों का हमारे आसपास की दुनिया पर गहरा प्रभाव पड़ सकता है। गौ–संरक्षण के प्रति उनकी दशक भर की प्रतिबद्धता करुणा, आत्मीय समर्पण और गहन सामुदायिक भावना की शक्ति का जीवंत उदाहरण है। यह न केवल पशु कल्याण का मार्ग प्रशस्त करता है, बल्कि समाज को सह–अस्तित्व और ज़िम्मेदारी की भावना से जोड़ने का भी कार्य करता है। उनकी यह सेवा हमें प्रेरित करती है कि हम भी अपने–अपने स्तर पर सकारात्मक बदलाव लाने का प्रयास करें। ऐसे कार्य न केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक स्थायी विरासत छोड़ जाते हैं।

मौन का माहात्म्य

मौन के भाव को प्राप्त हो जाना ही मुनि हो जाना है

वाणी आंतरिक ऊर्जा है और इस ऊर्जा की बचत करना ही मौन है। इसीलिए मौन को वाणी की सर्वोत्तम तपस्या कहा गया है। मौन की अवस्था व्यक्ति को आत्मनिरीक्षण, आत्मज्ञान और शांति का अनुभव कराती है। मौन के भाव को प्राप्त हो जाना ही मुनि हो जाना है। यह वह तप और साधना है जो बहिरंग से संबंध तोड़कर अंतस में स्थित आत्मतत्व से रिश्ता जोड़ती है। यह आत्म–अनुशासन और आत्मज्ञान का सरलतम साधन है। इससे इंद्रियनिग्रह की प्रवृत्ति का विकास होता है। मौन से शारीरिक, मानसिक और आत्मिक ऊर्जा की बचत होती है जो आत्मसाक्षात्कार में उपयोगी होती है। इसे अपनी दिनचर्या का हिस्सा बनाने के लिए अभ्यास की आवश्यकता होती है।

वाणी पर नियंत्रण कई अप्रिय स्थितियों से बचा लेता है। इसलिए हम परनिंदा और वाचालता का परित्याग करें। हमें सत्य भाषण करना चाहिए। गौतम बुद्ध ईश्वर, आत्मा और मरणोत्तर जीवन आदि तत्वमीमांसीय विषयों को अव्याकृत प्रश्न कहकर मौन हो जाते थे। भारतीय संस्कृति और आध्यात्मिकता में मौन को उच्चतम तपस्या माना गया है। इसीलिए हमारे मनीषियों ने माघ महीने की अमावस्या को मौनी अमावस्या नाम दिया।

फ्रांसिस बेकन का मत है कि मौन निद्रा के समान है, जो विवेक को नई स्फूर्ति देता है। यह न केवल व्यक्ति को आत्म–निरीक्षण और आत्मज्ञान की ओर प्रेरित करता है, बल्कि मन को स्थिरता प्रदान करता है। यह केवल बोलने से बचना नहीं है, बल्कि मन, विचार और वाणी सभी को संयमित रखना है। जब हम मौन रहते हैं तो हम अपने भीतर के आत्मतत्व से जुड़ते हैं। वाणी से चुप होने पर भी मन लगातार वाचाल रहता है, लेकिन जब मन शांत हो जाता है तभी मौन की आदर्श अवस्था स्थापित हो पाती है। यह आत्मा के साथ संवाद करने का एक प्रभावी माध्यम है। जब हम बाहर के लोगों से संवाद बंद कर देते हैं, तब हमारा अंतरसंवाद आरंभ हो जाता है।

डा. बिपिन पाण्डेय

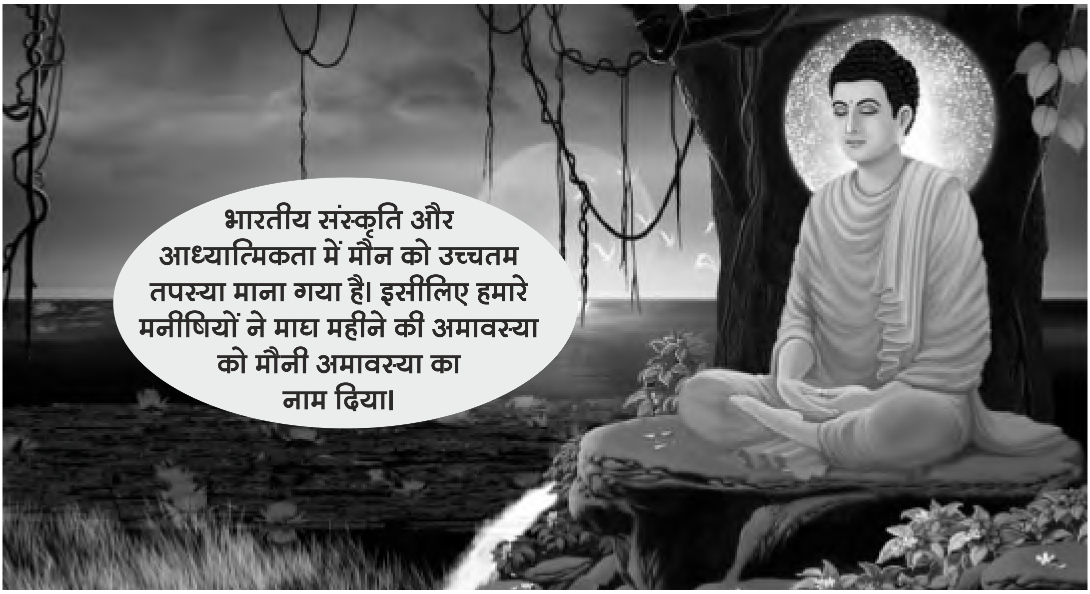

नशा मुक्ति केंद्र में गोमांस नहीं खाने पर हिंदू युवक को पिला दिया तेजाब, मृत्यु

मुराढाबाढ की घटना, सात दिनों तक केंद्र में खुद करते रहे इलाज

हालत बिगड़ने पर पिता ने कराया अस्पताल में भर्ती

मुरादाबाद (यूपी) : नशा मुक्ति एवं पुनर्वास केंद्र में गोमांस नहीं खाने पर हिंदू युवक को जबरन तेजाब पिलाने का मामला सामने आया है। आरोप है तेजाब पिलाने के बाद सात दिनों तक खुद ही उसका उपचार करते रहे। हालत बिगड़ने पर स्वजन पहुंचे और युवक को दिल्ली ले गए। 12 दिन तक सात अस्पतालों के चक्कर काटने के बाद भी पिता अपने बेटे को नहीं बचा पाए। गत माह उसकी मृत्यु हो गई।

विजय कुमार शर्मा का बेटा अजय शराब पीने का आदी था। गत 21 जनवरी को अजय को नशा मुक्ति केंद्र में भर्ती कराया गया। केंद्र को एक मुस्लिम युवक संचालित करता है। पिता का आरोप है कि भर्ती कराते ही बेटे पर गोमांस खाने का दबाव बनाना शुरू कर दिया गया। मना करने पर 29 जनवरी को जबरन तेजाब पिला दिया। उसकी हालत बिगड़ी तो स्वजन को जानकारी दिए बिना उपचार शुरू कर दिया।

बेटे की हालत गंभीर होने पर विजय शर्मा उसे निजी अस्पताल लेकर आए। इसके बाद दूसरे अस्पताल में लेकर पहुंचे, यहां से भी रेफर कर दिया गया। इसके बाद दिल्ली लेकर गए। वहां भी अजय की हालत में सुधार नहीं हुआ। तीन दिन पहले उसको मुरादाबाद लेकर आए। इस दौरान पुलिस को शिकायती पत्र दिया। आरोप है पुलिस ने युवक के बयान तक दर्ज नहीं किए। अंततः उसकी उसकी मृत्यु हो गई। इसके बाद पीड़ित परिवार एसएसपी से मिला। एसएसपी के आदेश पर पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा। केंद्र संचालक का फोन बंद होने से उसका पक्ष नहीं मिल सका है।

साभार : दैनिक जागरण

नूंह में गोहत्या के दोषी को 'मिली पांच साल की कैद

नूंह (हरियाणा) : नूंह सत्र न्यायालय ने गत माह फिरोजपुर झिरका के दोहा गांव निवासी नदीम को गोहत्या का दोषी मानते हुए पांच साल कैद की सजा सुनाई और 75 हजार रुपये का जुर्माना लगाया। अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश शशि चौहान की अदालत ने गोसंवर्धन एक्ट की धारा 13 (1) में उसे पांच साल की कैद व 40 हजार रुपये जुर्माना और 13 (3) में तीन साल की कैद व 35 हजार रुपये जुर्माने की सजा सुनाई। दोनों सजाएं एक साथ चलेंगीं। दरअसल, सात सितंबर 2020 को नदीम ने अपने घर के अंदर ही गाय की हत्या की थी और उसे टुकड़ों में काट रहा था। तभी फिरोजपुर झिरका पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया था। उप न्यायवादी जगबीर ने बताया कि पुलिस ने मौके से 70 किलो मांस बरामद किया था और नए कानून गोसंवर्धन एक्ट के तहत नदीम पर मामला दर्ज किया गया था। डीडी लैब में जांच के दौरान पुष्टि हुई कि यह गाय का ही मांस था। नदीम को आठ सितंबर को 2020 को जेल भेज दिया गया था और बाद में जमानत मिल गई थी। पहले गोकशी के मामलों में अक्सर सुबूतों के अभाव में आरोपित बरी हो जाते थे। प्रदेश सरकार ने 2015 में गोसंवर्धन एवं गोसंरक्षण अधिनियम कानून बनाया था। इस एक्ट के तहत तीन से 10 साल तक की सजा और एक लाख रुपये तक जुर्माने का प्रविधान है।

साभार : दैनिक जागरण

Dr. Aastha Pathak

THE IMPORTANCE OF COW DUNG IN HINDU RELIGION

In Hinduism, the cow is revered as a sacred animal, often referred to as "Gau Mata" or "Mother Cow." This reverence extends to every aspect of the cow, including its milk, urine, and dung. Cow dung, in particular, holds a significant place in Hindu religious practices, daily life, and cultural traditions. Its importance is deeply rooted in ancient scriptures, Ayurveda, and sustainable living practices. This article explores the multifaceted role of cow dung in Hinduism, highlighting its spiritual, medicinal, and ecological significance.

1. Spiritual Significance of Cow Dung

In Hinduism, cow dung is considered pure and is believed to possess divine qualities. It is often associated with Lord Krishna, who is depicted as a cowherd in his childhood. The use of cow dung in religious rituals symbolizes the connection between humans, nature, and the divine.

A. Purification and Sanctity

Cow dung is widely used for purification purposes. It is believed to have antiseptic and cleansing properties, both physically and spiritually. In many Hindu households, floors

are smeared with a mixture of cow dung and water to purify the living space before religious ceremonies or festivals. This practice, known as "lipan," is believed to ward off negative energies and invite positive vibrations.

B. Sacred Fire Rituals (Yajna)

Cow dung cakes, known as "uple" or "kande," are used as fuel in sacred fire rituals or yajnas. These rituals are performed to invoke divine blessings and purify the environment. The smoke from burning cow dung is believed to have medicinal properties and is said to cleanse the atmosphere of pollutants and harmful microorganisms.

C. Idol Making

During festivals like Ganesh Chaturthi and Durga Puja, cow dung is used to make idols of deities. These eco-friendly idols are immersed in water bodies after the festivities, causing no harm to the environment. This practice reflects the Hindu philosophy of harmony with nature.

2. Medicinal and Ayurvedic Importance

Cow dung has been used in Ayurveda, the ancient Indian system of medicine, for its therapeutic properties. It is believed to have antibacterial, antifungal, and healing qualities.

A. Antiseptic Properties

Cow dung is rich in minerals like nitrogen, potassium, and phosphorus, which make it an effective natural disinfectant. In rural areas, it is applied to wounds to prevent infections and promote healing. Its antiseptic properties are also utilized in treating skin conditions like eczema and psoriasis.

B. Detoxification

Cow dung ash, known as "vibhuti," is used in Ayurvedic treatments for detoxification. It is believed to balance the body's doshas (Vata, Pitta, and Kapha) and improve overall health. Vibhuti is also applied on the forehead as a tilak, symbolizing spiritual awakening and protection.

C. Digestive Health

In traditional medicine, cow dung is used to treat digestive disorders. It is mixed with other natural ingredients to create remedies for ailments like constipation, bloating, and indigestion. While modern science may question these practices, they continue to be a part of rural healthcare in India.

3. Ecological and Agricultural Benefits

Cow dung plays a vital role in sustainable farming and environmental conservation. Its use in agriculture and daily life reflects the Hindu principle of "Dharma," which emphasizes living in harmony with nature.

A. Natural Fertilizer
Cow dung is an excellent organic fertilizer, rich in nutrients that enhance soil fertility. It improves soil structure, retains moisture, and promotes the growth of beneficial microorganisms. Unlike chemical fertilizers, cow dung does not harm the environment or deplete soil health over time.

B. Biogas Production
Cow dung is a key ingredient in the production of biogas, a renewable source of energy. Biogas plants use cow dung to generate methane, which can be used for cooking and lighting. This reduces dependence on fossil fuels and minimizes greenhouse gas emissions.

C. Pest Repellent
In organic farming, cow dung is used as a natural pest repellent. Its strong odor deters insects and pests, reducing the need for chemical pesticides. This practice aligns with the Hindu ethos of ahimsa (non-violence) and respect for all living beings.

4. Cultural and Social Significance
Cow dung is deeply ingrained in the cultural fabric of Hindu society. Its use in daily life reflects the community's connection to nature and traditional values.

A. Rural Economy
In rural India, cow dung is a valuable resource that supports livelihoods. It is used to make cow dung cakes, which are sold as fuel in local markets. This provides a source of income for many families, especially women.

B. Festivals and Rituals
Cow dung is an integral part of Hindu festivals and rituals. During Diwali, cow dung is used to make small lamps called "diyas", which are lit to symbolize the victory of light over darkness. In rural areas, cow dung is used to create intricate patterns called "rangoli" during festivals like Pongal and Onam.

C. Symbol of Prosperity
In Hindu culture, cow dung is seen as a symbol of prosperity and abundance. It is believed that a house with a healthy cow and ample cow dung is blessed with wealth and happiness. This belief underscores the importance of cows in agrarian societies.

5. Modern Relevance and Challenges
In contemporary times, the use of cow dung faces challenges due to urbanization, changing lifestyles, and skepticism about traditional practices. However, its ecological and spiritual significance continues to resonate with many.

A. Revival of Traditional Practices
There is a growing interest in reviving traditional practices that utilize cow dung, especially in the context of sustainable living and organic farming. Many eco-conscious individuals and organizations are promoting the use of cow dung as a natural alternative to chemical products.

B. Scientific Validation
Modern science is beginning to explore the potential benefits of cow dung. Research has shown that cow dung contains beneficial microbes that can improve soil health and reduce pollution. This scientific validation may help bridge the gap between traditional beliefs and modern practices.

C. Environmental Concerns
While cow dung is eco-friendly, its improper disposal can lead to environmental issues like water pollution. It is essential to promote responsible use and disposal of cow dung to maximize its benefits and minimize its impact on the environment.

Sanjay Raman "Vidyavachaspati"

THE HOLISTIC SIGNIFICANCE OF COW DERIVATIVES IN AYURVEDA AND SUSTAINABLE AGRICULTURE

Cows have held a revered position in Indian civilization for millennia, not only for their religious significance but also for their indispensable contributions to Ayurveda and agriculture. Cow urine (Gomutra) and cow dung (Gobar) are two invaluable derivatives that have gained recognition for their therapeutic efficacy and applications in sustainable farming, promoting ecological harmony and holistic well-being. In Ayurveda, cow urine is considered a potent remedy with bio-enhancing, antimicrobial, antifungal and detoxifying properties. As an integral component of Panchagavya—a sacred blend of five bovine products: milk, curd, ghee, urine and dung—it is believed to purify the body and balance the tridoshas (Vata, Pitta, and Kapha). Enriched with bioactive compounds like potassium, nitrogen, sulfur, enzymes and hormones, cow urine is reputed to detoxify the human system, enhance immunity and revitalize essential organs. It has been validated by scientific research for its efficacy in managing conditions such as diabetes, skin disorders and even as a complementary treatment in cancer therapy. Panchagavya is particularly celebrated for its antioxidant properties, which mitigate oxidative stress and foster vitality. Its immuno-modulatory attributes further establish cow urine as a cornerstone of alternative healing systems, enabling the body to resist infections and chronic diseases effectively.

Cow dung, another crucial derivative, has been traditionally used in Indian households for its antiseptic and antimicrobial properties, often applied as a natural disinfectant for floors and walls. In

Ayurvedic practices, it is combined with medicinal herbs to create poultices that treat skin ailments, wounds and inflammation. Its ability to detoxify and promote cellular regeneration underscores its significance in holistic and naturopathic healing. Beyond its therapeutic uses, cow dung has played a pivotal role in organic agriculture as a sustainable alternative to synthetic fertilizers. Rich in essential nutrients like nitrogen, phosphorus and potassium (NPK), it enhances soil fertility, microbial activity and water retention. When processed into compost or vermicompost, it improves soil health and fosters robust plant growth. Generations of Indian farmers have relied on ***Jeevamrit***, an organic bio-fertilizer made from cow dung, cow urine, jaggery, gram flour and water, to replenish soil nutrients, control plant diseases and boost crop productivity.

Cow urine also functions as a natural pesticide and liquid fertilizer, protecting crops from fungal and bacterial infections while promoting plant growth. When diluted with water and used as a foliar spray, it acts as a pest deterrent and growth enhancer. Combined with cow dung in Panchagavya, it provides an integrative solution that improves soil vitality, augments crop yield and fortifies plants against environmental stressors. This blend also enhances the nutritional quality of produce, making it a valuable resource for sustainable farming. Beyond agriculture, cow dung serves as a renewable energy source in rural India. It is utilized in biogas plants to produce methane gas, a clean fuel used for cooking and lighting, reducing dependence on firewood and fossil fuels. The by-product of biogas generation, called slurry, is potent organic manure that supports regenerative farming practices. Additionally, cow dung-based briquettes are emerging as an eco-friendly alternative to charcoal, aiding in the reduction of carbon emissions and further promoting environmental sustainability.

In recent years, the combined use of cow dung and urine has gained widespread recognition as an eco-friendly substitute for chemical agro-inputs. This shift has addressed pressing concerns such as soil degradation, water contamination and harmful residues in the food chain. Organic farming practices leveraging these resources have gained momentum, contributing to food security, biodiversity preservation and climate change mitigation. Scientific studies continue to substantiate the efficacy of these time-honored practices, encouraging farmers to adopt sustainable and eco-conscious methodologies. The utilization of cow urine and dung reflects the symbiotic relationship between humans, animals and nature. While their applications in Ayurveda provide natural remedies for a multitude of health challenges, their role in agriculture supports cost-effective, environmentally friendly farming practices. By integrating ancient wisdom with modern innovations, these resources have the potential to foster sustainable development, improve public health and maintain ecological balance. Far from being mere by-products, cow derivatives are invaluable assets that bridge tradition and modernity, shaping a future rooted in holistic well-being and environmental stewardship.

हार्दिक निवेदन

सभी गोभक्त–गोप्रेमी बंधुओं से करबद्ध अनुरोध है कि वे इस पत्रिका का सदस्य अवश्य बनें और अन्य गोभक्तों को भी सदस्य बनायें। कृपया सभी लोग अपना वार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता शुल्क निम्नलिखित बैंक व खाता नंबर में जमा कराएं –

पंजाब नेशनल बैंक, बसंत लोक, नई दिल्ली

खाता नम्बर – 04072010038910 IFSC CODE : PUNB0040710

नोट – शुल्क "भारतीय गोवंश रक्षण संवर्द्धन परिषद" के नाम पर जमा करें। सम्पर्क सूत्र : 011.26174732

pnb punjab national bank
...the name you can BANK upon!

अब आप यूपीआई के माध्यम से भी पत्रिका का शुल्क जमा कर सकते हैं

SCAN & PAY USING ANY BHIM UPI APP

9958710672m@pnb

MERCHANT: BHARTIYA GOVANSH RAKSHAN SAMVARDHAN PARISHAD

BHIM | UPI
BHARAT INTERFACE FOR MONEY
UNIFIED PAYMENTS INTERFACE

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6"
Email : gosampada@gmail.com
website : www.vhp.org

Registered No. DL-SW-01/4027/24-26
RNI No. 69508/98 प्रस्तुति : 13–14
प्रकाशन तिथि : 11 मार्च, 2025

प्रयागराज-महाकुंभ में आयोजित गोरक्षा सम्मेलन का विहंगम दृश्य

प्रकाशक व मुद्रक राजेन्द्र प्रसाद सिंहल ने रायल प्रेस,
बी 81, ओखला इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, नई दिल्ली से मुद्रित कर भारतीय गोवंश रक्षण संवर्धन परिषद् (विहिप)
संकटमोचन आश्रम, सेक्टर-6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली-22 के लिए प्रकाशित की। संपादक - देवेन्द्र नायक